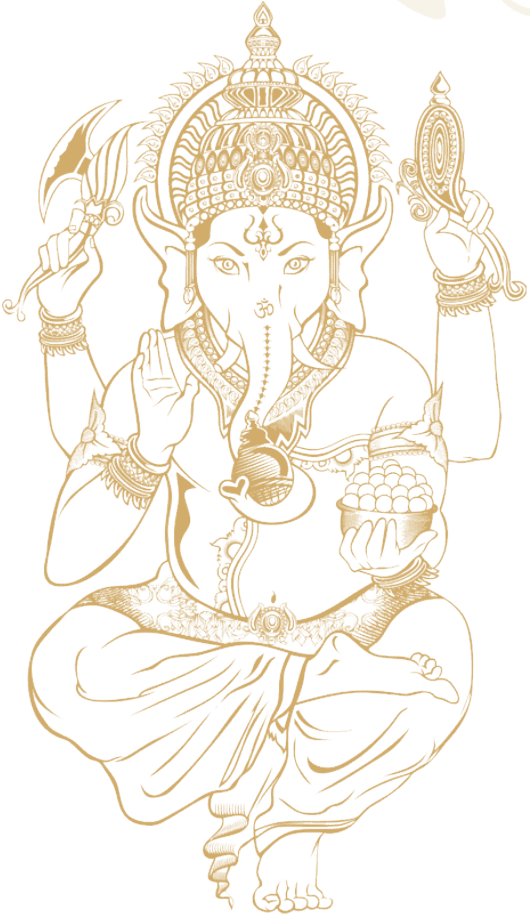

1 GB

26 Dec 2025

12:58 PM

Gorakhpur

Model: Baby-Horoscope

Order No: 120845301

तिथि 26/12/2025 **समय** 12:58:00 **वार** शुक्रवार **स्थान** Gorakhpur **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:17
अक्षांश 26:45:00 उत्तर **रेखांश** 83:23:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** 00:03:32 घंटे

पंचांग		अवकहड़ा चक्र	
साम्पातिक काल	19:21:45 घं	गण	मनुष्य
वेलान्तर	00:00:34 घं	योनि	सिंह
सूर्योदय	06:43:22 घं	नाड़ी	आद्य
सूर्यास्त	17:11:02 घं	वर्ण	शूद्र
चैत्रादि संवत	2082	वश्य	मानव
शक संवत	1947	वर्ग	मेष
मास	पौष	युँजा	अन्त्य
पक्ष	शुक्ल	हंसक	वायु
तिथि	6	जन्म नामाक्षर	से-सेविका
नक्षत्र	पू०भाद्रपद	पाया(रा.-न.)	स्वर्ण-लौह
योग	सिद्धि	होरा	सूर्य
करण	तैतिल	चौघड़िया	शुभ

विंशोत्तरी
गुरु 13वर्ष 4मा 24दि
गुरु
26/12/2025
22/05/2039

	26/12/2025
शनि	20/01/2028
बुध	27/04/2030
केतु	03/04/2031
शुक्र	02/12/2033
सूर्य	20/09/2034
चन्द्र	20/01/2036
मंगल	26/12/2036
राहु	22/05/2039

योगिनी
भ्रामरी 3वर्ष 4मा 6दि
भ्रामरी
26/12/2025
03/05/2029

	26/12/2025
भद्रिका	03/05/2026
उल्का	02/01/2027
सिद्धा	13/10/2027
संकटा	01/09/2028
मंगला	12/10/2028
पिंगला	01/01/2029
धान्या	03/05/2029

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			03:41:18	मेष	अश्विनी	2	केतु	चंद्र	---	0:00			
सूर्य			10:33:03	धनु	मूल	4	केतु	शनि	मित्र राशि	1.53	पुत्र	पितृ	क्षेम
चंद्र			22:09:55	कुंभ	पू०भाद्रपद	1	गुरु	शनि	सम राशि	1.17	भ्रातृ	मातृ	जन्म
मंगल		अ	14:07:05	धनु	पूर्वाषाढ़ा	1	शुक्र	शुक्र	मित्र राशि	1.01	मातृ	भ्रातृ	प्रत्यारि
बुध			25:51:07	वृश्चि	ज्येष्ठा	3	बुध	राहु	सम राशि	0.93	अमात्य	ज्ञाति	विपत
गुरु	व		27:51:41	मिथु	पुनर्वसु	3	गुरु	शुक्र	शत्रु राशि	1.23	आत्मा	धन	जन्म
शुक्र		अ	07:49:33	धनु	मूल	3	केतु	गुरु	सम राशि	0.85	ज्ञाति	कलत्र	क्षेम
शनि			01:38:23	मीन	पू०भाद्रपद	4	गुरु	राहु	सम राशि	0.87	कलत्र	आयु	जन्म
राहु			17:01:43	कुंभ	शतभिषा	4	राहु	शुक्र	मित्र राशि		---	ज्ञान	अतिमित्र
केतु			17:01:43	सिंह	पू०फाल्गुनी	2	शुक्र	चंद्र	शत्रु राशि		---	मोक्ष	प्रत्यारि

लग्न-चलित

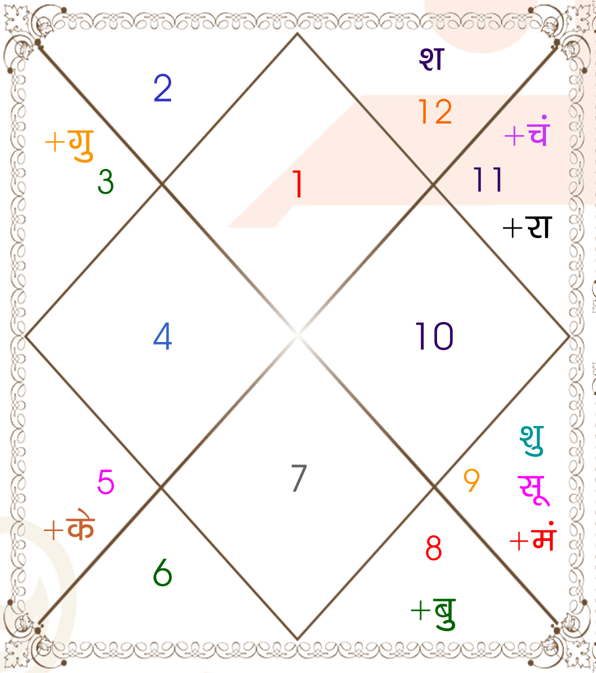

चन्द्र कुंडली

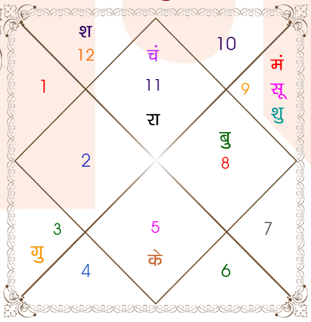

नवमांश कुंडली

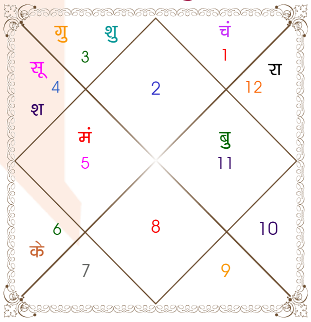

सर्वाष्टकवर्ग

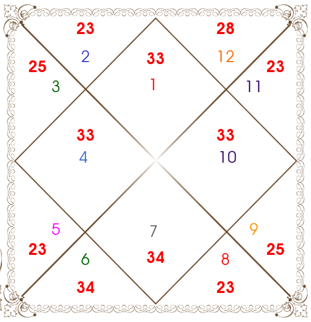

दशमांश कुंडली

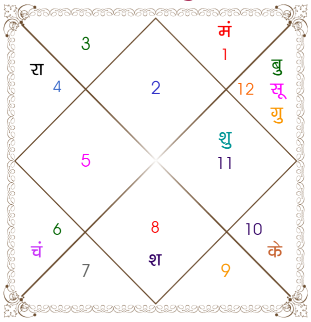

Jyotirvid Prabhat Tripathi (Sun Astrology Consultancy)
Netaji Subhash Chandra Bose Nagar Gorakhnath Gorakhpur
9918060251
sunastrology01@gmail.com

नक्षत्रफल

आप पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र के प्रथम चरण में पैदा हुई हैं। अतः आपकी जन्मराशि कुम्भ तथा राशिस्वामी शनि होगा। नक्षत्र के अनुसार आपकी योनि सिंह, वर्ण शूद्र, वर्ग मेष, गण मनुष्य तथा नाड़ी आद्य होगी। नक्षत्र के प्रथम चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ ”से” या ”सै” अक्षर से होगा।

आप अपनी इन्द्रियों को सर्वदा पूर्णरूपेण वश में रखने में समर्थ रहेंगी। साथ ही आप विभिन्न प्रकार की कलाओं तथा कार्यों को सम्पन्न करने में सक्षम रहेंगी तथा चतुराई से इन्हें सम्पन्न करेंगी। इससे समाज में आप को पूर्ण आदर तथा सम्मान की प्राप्ति होगी। आप दुश्मनों पर विजय प्राप्त करने में भी सर्वदा सफल रहेंगी। आपके अधिकांश सांसारिक कार्य बुद्धिमता से ही सम्पन्न होंगे। जीवन में आप प्रसन्नता प्राप्त करेंगी।

जितेन्द्रियः सर्वकलासु दक्षो जितारिपक्षः खलु यस्य नित्यम्।
भवेन्मनीषा सुतरामपूर्वा पूर्वादिका भाद्रपदा प्रसूतौ।।
जातकाभरणम्

अर्थात् पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र में उत्पन्न जातक जितेन्द्रिय, समस्त कलाओं में निपुण, शत्रुपक्ष को जीतने वाला तथा बुद्धिमान होता है।

अपने पति पर आपका पूर्ण नियंत्रण रहेगा एवं समस्त सांसारिक कार्यों को वे आपकी आज्ञा या कथनानुसार ही सम्पन्न करेंगे। इस सम्बन्ध में वे किसी भी प्रकार स्वतंत्र निर्णय लेने में असमर्थ रहेंगे। आप हमेशा विपुल धन सम्पत्ति की स्वामिनी रहेंगी एवं इससे सुसम्पन्न रहकर सुखपूर्वक जीवन में इसका उपभोग करेंगी। इसके साथ ही आप एक चतुर तथा विदुषी महिला भी होंगी लेकिन आपका स्वभाव कंजूसी से युक्त रहेगा। आपकी इस प्रवृति से अधिकांश लोग आपसे अप्रसन्न रहेंगे।

भाद्रपदासूद्विग्नः स्त्रीजितधनी पटुरदाता च।।
बृहज्जातकम्

अर्थात् पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य हृदय से दुःखी, स्त्री के वश में रहने वाला, धनवान चतुर पीड़ित तथा कृपण स्वभाव का होता है।

आपकी वाणी साहसिक तथा ओजस्विता के भाव से युक्त रहेगी तथा इसी का आप अपने सम्भाषण में उपयोग करेंगी जिससे अन्य लोग आपसे प्रभावित होंगे तथा आपका यथोचित आदर सत्कार करेंगे। आप प्रायः भय से भी त्रस्त रहेंगी लेकिन सामाजिक जनों से आपके आपसी संबंध तथा व्यवहार मधुरतापूर्ण रहेंगे।

पूर्वप्रोष्ठपदि प्रगल्भवचनो धूर्तोभयार्तो मृदुः।।
जातक परिजातः

अर्थात् पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र में पैदा होने वाला पुरूष साहस एवं ओजस्वी वाणी बोलने वाला, धूर्त, भय से व्याकुलता प्राप्त करने वाला तथा मृदुस्वभाव का होता है।

आप एक उच्च कोटि की वक्ता होंगी तथा अपने वक्तव्यों से जन सामान्य को प्रभावित तथा आकर्षित करने में सफल रहेंगी। आप हमेशा सुखसंसाधनों से युक्त रहेंगी तथा सुखपूर्वक अपना सांसारिक जीवन व्यतीत करेंगी। साथ ही परिवार से आप युक्त रहेंगी एवं समाज में सर्वत्र सम्माननीया तथा आदरणीया रहेंगी। आप को नींद अधिक मात्रा में आएगी तथा आलस का पूर्ण प्रभाव भी आपके ऊपर रहेगा। अतः कई बार आप ुछ भी कार्य को करने की इच्छा नहीं करेंगी।

वक्ता सुखीप्रजायुक्तो बहुनिद्रोनिरर्थकः।
पूर्वभाद्रपदायां च जातो भवति मानवः।।
मानसागरी

अर्थात् पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र में उत्पन्न जातक श्रेष्ठ वक्ता, सुखी, सम्मान वाला, अधिक नींद वाला तथा स्वयं किसी कार्य के योग्य नहीं होता है।

आप स्वर्ण पाद में पैदा हुई हैं। स्वर्ण पाद में पैदा होने के कारण जातक कई प्रकार से जीवन में दुःख एवं कष्ट प्राप्त करता है तथा इसमें उसका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता एवं धनाभाव से भी नित्य दुःखी रहता है। साथ ही जीवन में उसे सुखसंसाधनों की भी अल्पता रहती है। जिससे उसके मन में नित्य तनाव व्याप्त रहता है। साथ ही प्रत्येक क्षेत्र में उसे अत्याधिक परिश्रम के द्वारा ही सफलता अर्जित हो सकती है। परन्तु आपकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा शुभ वर्ग में स्थित है। अतः इससे आपको अशुभ फल अल्प तथा शुभ फल अधिक मात्रा में प्राप्त होंगे।

अतः आप जीवन में सम्पूर्ण सुखसंसाधनों से युक्त रहेंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इनका उपभोग करेंगी। साथ ही धन ऐश्वर्य एवं नौकर चाकरों से भी आप सम्पन्न रहेंगी। आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगी तथा एक धनवान महिला के रूप में समाज में ख्याति अर्जित करेंगी। सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे एवं आपको यथोचित सम्मान भी प्रदान करेंगे। आप विभिन्न प्रकार के वाहनादि से भी सुशोभित रहेंगी। आप हमेशा सद्गुणों से सुसम्पन्न रहेंगी। आपके पति तथा पुत्र भी सुन्दर गुणवान एवं सम्मानित रहोंगे। साथ ही सेवक गण भी गुणसम्पन्न होंगे। आपकी आयु दीर्घायु होगी तथा आपके लिए लाभमार्ग हमेशा प्रशस्त रहेंगे। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा शारीरिक कान्ति भी दर्शनीय रहेगी। इसके अतिरिक्त पुत्रादि सुख को आप प्राप्त करने में भी सौभाग्यशाली रहेंगी।

कुम्भ राशि में पैदा होने के कारण आपकी नाक ऊंची होगी तथा मुख एवं मस्तक में भी विस्तृतता रहेगी। साथ ही आपके हाथ, पैर तथा कटिभाग में स्थूलता दृष्टिगोचर होगी। आप के शरीर में लावण्यता की अल्पता रहेगी परन्तु अन्य उपायों से आपका सौन्दर्य एवं आकर्षण पर इसका विशेष दुष्प्रभाव नही पड़ेगा तथा उसमें पूर्ववत् सौन्दर्य बना रहेगा। आप के मन में विद्रोह की भावना भी रहेगी तथा कभी कभी अपने श्रेष्ठलोगों के समक्ष अपनी इस प्रवृति

का प्रदर्शन करेंगी। धर्म के प्रति आपकी श्रद्धा रहेगी। आप शिल्प या चित्रकारी में विशेष रूचिशील रहेंगी तथा स्वप्रयत्न एवं परिश्रम से इसमें विशेष योग्यता तथा ख्याति अर्जित करने में सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त आप कभी कभी मानसिक चिन्ताओं से भी व्याकुलता की अनुभूति करेंगी।

उद्घोणो रूक्षदेहः पृथुकरचरणो मद्यपान प्रसक्तः।
सद्द्वेष्यो धर्महीनः परसुतजनकः स्थूलमूर्धाकुनेत्रः।।
शाठ्यालस्याभिभूतो विपुलमुखकटिः शिल्पविद्या समेते।
दुःशीलो दुःखतप्तो घटभमुपगते रात्रिनाथे दरिद्रः।।
सारावली

आप विविध प्रकार के शास्त्रों का अच्छा ज्ञान रखेंगी एवं एक विदुषी के रूप में समाज में प्रसिद्ध रहेंगी। साथ ही विभिन्न प्रकार के कार्यो को सम्पन्न करने में भी आप निपुण रहेंगी। आप शत्रुवर्ग पर विजय प्राप्त करने एवं उनका प्रभाव खत्म करने में हमेशा सफलता अर्जित करेंगी।

अलसता सहितोनयसुतप्रियः कुशलताकलितोळति विचक्षणः।
कलशगामिनि शीतकरे नरः प्रशमितः शमितोरूरिपुव्रजः।।
जातकाभरणम्

आप गुप्त रूप से क्रूर कर्मो को करने के लिए भी प्रयत्नशील रहेंगी या प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से इन्हे अपना सहयोग प्रदान करेंगी। आप यात्रा तथा भ्रमण करने में अत्यन्त ही रूचिशील रहेंगी तथा अपना अधिकांश समय सामान्यतया घूमने फिरने या यात्रादि करने में ही व्यतीत करेंगी। दूसरे की धन सम्पत्ति के प्रति आपके मन में लोलुपता का भाव रहेगा एवं इसको प्राप्त करने की इच्छा भी सतत् आप के मन में बनी रहेगी। आपकी आर्थिक स्थिति में नित्य उतार चढाव आते रहेंगे। कभी आप अत्याधिक मात्रा में धनार्जन करेंगी तो कभी अत्यल्प मात्रा में। इसके अतिरिक्त सौन्दर्य प्रसाधनों तथा सुगन्धित द्रव्यों के लेपन में आपकी तीव्र रूचि रहेगी तथा पुष्पादि के प्रति भी आपकी आसक्ति रहेगी एवं यत्नपूर्वक आप जीवन में इनका उपयोग करती रहेंगी।

प्रच्छन्नपापो घटतुल्य देहो विघातदक्षोळध्वसहो डवित्तः।
लुब्धः परार्थी क्षयवृद्धि युक्तो घटोद्भवः स्यात्प्रियगन्धपुष्पः।।
फलदीपिका

आप एक उत्तम श्रेणी की विदुषी होंगी तथा समाज में आपको यश प्राप्त होगा लेकिन अन्य विद्वानों को आपके द्वारा उचित आदर तथा सम्मान की प्राप्ति नही होगी अतः अधिकांश लोग आपसे नाराज रहेंगे।

कुम्भस्थे गतशीलवान बुधजनद्वेषी च विद्याधिको।
जातक परिजातः

आप प्रायः जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता तथा विजय प्राप्त करती रहेंगी तथा अपने सदाचरण के द्वारा अन्य लोगों से सम्मान्नित होगी। धनवैभव से आप प्रायः सुसम्पन्न रहेंगी परन्तु यदा कदा इसका अभाव भी आपके पास रहेगा। गुरूजनों तथा अन्य सम्माननीय सम्बन्धियों के प्रति आपके मन में आदर तथा श्रद्धा का भाव रहेगा एवं समय समय पर उनकी सेवा तथा सहायता के लिए भी आप उद्यत रहेंगी। पुरूष वर्ग में आप प्रिय एवं सम्माननीय रहेंगी तथा अवसरानुकूल उनकी सेवा एवं सहयोग के लिए भी तत्पर रहेंगी। आप विशाल परिवार की स्वामिनी रहेंगी तथा जाति या वर्ग के इष्ट कार्य के सिद्धि के लिए आप सर्वदा तन, मन धन से अपना सहयोग प्रदान करके उस कार्य में सफलता अर्जित करेंगी। अतः इनके मध्य आप सम्मानित तथा श्रद्धेया रहेंगी। इसके साथ ही कई अन्य सद्गुणों से आप युक्त रहेंगी तथा जीवन में उनका अनुपालन करके सुखानुभूति प्राप्त करेंगी।

भुवनविजययुक्तः सुन्दरः सच्चरित्रः।
स्थिरधन गुरुभक्तो मानिनी चित्तरक्तः।।
बहुजनपरिवारो ज्ञातिवर्गेष्ट कर्ता।
सकलगुणसमेतः कुम्भराशि र्मनुष्यः।।
जातक दीपिका

आपकी गर्दन की लम्बाई अधिक रहेगी तथा शारीरिक नसे स्पष्ट रूप से बाहर दिखाई देंगी। अपने कार्य क्षेत्र या समाज में अन्य पुरूषों से भी आपके मित्रतापूर्ण संबंध रहेंगे। इसके अतिरिक्त मित्रवर्ग के प्रति आपके मन में विशेष स्नेह तथा प्रेम का भाव रहेगा तथा उनको यथाशक्ति स्नेह एवं सहयोग प्रदान करती रहेंगी।

करभगलः शिरालुः खरलोमशदीर्घतनुः।
पृथुचरणोरूपृष्ठ जघनास्य कटिर्जरठः।।
परवनितार्थ पापनिरतः क्षयवृद्धियुतः।
प्रियकुसुमानुलेपन सुहृदघटजो ऽध्वसहः।।
वृहज्जातकम्

आपकी स्वाभाविक वृति दानशील रहेगी तथा यथाशक्ति आप जरूरत मन्द लोगों को अवसरानुकूल दान देती रहेंगी। साथ ही कृतज्ञता का भाव भी आप में विद्यमान रहेगा एवं अन्य जनों के द्वारा उपकृत होने पर आप हृदय से उनका उपकार स्वीकार करेंगी तथा उनके प्रति आभार भी प्रकट करेंगी। आपकी आखें अत्यन्त ही सुन्दर होगी एवं बुद्धि में भी सरलता का भाव रहेगा तथा किसी अन्य के साथ धोखा या प्रपंच आदि करने की प्रवृति आपकी नहीं रहेगी। जीवन में विभिन्न प्रकार के वाहन साधनों से आप सुसम्पन्न रहेंगी तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग भी करेंगी। इस प्रकार अपने मृदु व्यवहार तथा स्नेह शील स्वभाव के कारण आप समाज में लोकप्रिय रहेंगी एवं आनन्दपूर्वक अपना जीवन व्यतीत करेंगी।

दातालसः कृतज्ञश्च गजवाजिधनैश्वरः।
शुभदृष्टिः सदासौम्यो धनविद्याकृतोद्यमः।।
पुण्याढ्यः स्नेहकीर्तिश्च धनभोगी स्वशक्तः।

शालूरकुक्षिर्निर्भीतः कुम्भे जातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

मनुष्य गण में उत्पन्न होने के कारण आप धार्मिक प्रवृति की महिला होंगी तथा देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा तथा सेवा का भाव रहेगा। लेकिन आपकी वृति अभिमानी भी रहेगी तथा यथासमय इसका प्रदर्शन भी अन्य जनों के समक्ष करती रहेंगी। दया एवं करूणा के भाव का भी आप प्रायः पालन करती रहेंगी। आप शारीरिक बल से परिपूर्ण रहेंगी तथा अपने अधिकांश कार्यो को अपने बल से ही सम्पन्न भी करेंगी। आप कई प्रकार की कलाओं तथा कार्यों को करने में भी निपुण रहेंगी एवं इस प्रवृति से आप समाज में ख्याति अर्जित करेंगी। आप एक विदुषी महिला होंगी एवं आपकी शारीरिक कान्ति दर्शनीय एवं आकर्षक रहेगी। इसके अतिरिक्त आप अन्य बहुत से लोगों की सुख प्रदाता भी रहेंगी।

समाज में आप आदरणीया तथा सम्माननीया रहेंगी तथा धनैश्वर्य से प्रायः सम्पन्न रहेंगी। आपकी आखें बड़ी बड़ी होगी तथा निशाने बाजी की कला में भी आप निपुण रहेंगी एवं इस क्षेत्र में विशेष सफलता या ख्याति अर्जित कर सकेंगी। आपका वर्ण गौरवर्ण रहेगा एवं नगर के लोगों पर आपका पूर्ण प्रभुत्व रहेगा। अतः आप नगर की एक प्रतिष्ठित तथा श्रद्धेय महिला हो सकेंगी।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

सिंह योनि में पैदा होने के कारण आप धार्मिकता की भावना से युक्त रहेंगी एवं समस्त धार्मिक प्रवृतियों का श्रद्धापूर्वक अनुपालन करेंगी। आप सत्कार्यों को करने में रूचिशील रहेंगी तथा आपके इन कार्यों से अन्य सामाजिक लोग भी लाभान्वित होते रहेंगे अतः समाज में आपका पूर्ण मान सम्मान रहेगा आप कई प्रकार के सद्गुणों से भी सम्पन्न होंगी एवं यथाशक्ति इनका अनुपालन करती रहेंगी। इसके साथ ही आपका परिवार आपके द्वारा अत्यन्त ही उन्नति एवं समृद्धि को प्राप्त होगा। अतः परिवार में आप अत्यन्त ही श्रेष्ठ एवं सम्माननीया समझी जाएंगी।

स्वधर्मे तु सदाचारसत्क्रियासद्गुणान्वितः।
कुटुम्बस्य समुद्धर्ता सिंहयोनिभवो नरः।।
मानसागरी

अर्थात् सिंहयोनि में उत्पन्न जातक अपने धर्म में सच्चा आचार-व्यवहार वाला, अच्छी क्रिया एवं अच्छे गुणों से सम्पन्न और परिवार का उद्धार करता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा एकादश भाव में स्थित है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में विशेष वात्सल्य का भाव भी विद्यमान रहेगा। जीवन में वे प्रत्येक क्षेत्र में आपका यत्नपूर्वक पूर्ण सहयोग करती रहेंगी। आपके आर्थिक साधनों की अभिवृद्धि में उनका पूर्ण सहयोग रहेगा। साथ ही मातृपक्ष से भी आप पूर्ण आर्थिक लाभ एवं अन्य प्रकार से सुखार्जन करेंगी।

आप की भी माता के प्रति हादिक श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेंगी एवं उनकी आज्ञा पालन के लिए भी आप प्रायः तत्पर रहेंगी। जीवन में आप हर प्रकार से उनकी सहायता एवं सहयोग भी करेंगी तथा अवसरानुकूल उनको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा आपसी मतभेद अत्यन्त ही अल्प मात्रा में रहेंगे।

आपके जन्म काल में सूर्य नवम भाव में स्थित है अतः आपके पिता का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं समय समय पर वे शारीरिक रूप से कष्टानुभूति भी प्राप्त करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा। धन धान्य का वे पूर्ण लाभार्जन करेंगे एवं जीवन में आपको सर्वप्रकार से आपको अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपके भाग्य की उन्नति में भी वे पूर्ण सहयोग एवं प्रेरणा आपको प्रदान करते रहेंगे।

आप भी उनका पूर्ण हार्दिक सम्मान करेंगी एवं प्रायः उनकी आज्ञा का पालन करती रहेंगी। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा किसी सैद्धान्तिक मतभेद पर इसमें कटुता या तनाव भी परिलक्षित होगा परन्तु कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वतः ही समाप्त हो जाएगा। साथ ही जीवन में आप उनका सुख दुःख में पूर्ण ध्यान रखेंगी एवं उन्हें सर्वदा वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी।

आपकी जन्मकुण्डली में मंगल की स्थिति नवम भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा वे शारीरिक अस्वस्थता की भी अनुभूति करेंगे। आपके प्रति उनके मन में स्नेह तथा सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा एवं यत्नपूर्वक जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी भाग्योन्नति करते रहेंगे। साथ ही आपकी सहायता करते रहेंगे। साथ ही आपकी भाग्योन्नति में भी उनकी मुख्य भूमिका रहेगी एवं सुख दुःख में सर्वदा पूर्ण सहयोग रहेगा।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह एवं सम्मान का भाव रहेगा एवं आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी परन्तु आपसी मतभेदों के कारण यदा कदा कटुता का वातावरण भी बनेगा लेकिन यह अल्प समय के लिए रहेगा। इसके अतिरिक्त आप सुख दुःख में उनका पूर्ण सहयोग करेंगी एवं समयानुसार वांछित आर्थिक सहायता भी प्रदान करेंगी।

आपके लिए चैत्र मास, तृतीया, अष्टमी तथा त्रयोदशी तिथियां, आर्द्रानक्षत्र, गण्डयोग, वणिजकरण, गुरूवार, तृतीय प्रहर तथा मिथुन राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अनिष्ट फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 मार्च से 14 अप्रैल के मध्य 3,8,13 तिथियों, आर्द्रा नक्षत्र, गण्डयोग तथा वणिजकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ

ही गुरूवार, तृतीय प्रहर एवं मिथुन राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यो में त्याज्य रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य के प्रति भी सावधानी रखनी चाहिए।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक चिन्ताएं, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में असफलता तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में बाधाएं उत्पन्न हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव कुबेर की श्रद्धापूर्वक उपासना करनी चाहिए तथा शनिवार के भी नियमित रूप से उपवास रखने चाहिए। साथ ही सोना, नीलम, लोहा, तिल, तेल कम्बल आदि पदार्थो का किसी सुपात्र को दान देना चाहिए। इसके अतिरिक्त शनि के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 19000 जप कसी योग्य विद्वान द्वारा सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपकी मानसिक चिन्ताएं दूर होंगी तथा समस्त अशुभ फलों का नाश होकर शुभफलों की वृद्धि होगी। साथ ही सर्वत्र लाभमार्ग भी प्रशस्त होंगे।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।

मंत्र- ऊँ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः।

Jyotirvid Prabhat Tripathi (Sun Astrology Consultancy)
Netaji Subhash Chandra Bose Nagar Gorakhnath Gorakhpur
9918060251
sunastrology01@gmail.com